पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का साम्य

Equilibrium of firm under perfect competition

B.A. First year

MICRO ECONOMICS

3rd UNIT

Dr. Ranjna Neelima Kachhap

Asstt. Prof. Eco.

Govt. Naveen Girls College Baikunthpur

Distt. Korea C.g.

भूमिका – (introduction)

परिभाषा (Definition)

पूर्ण प्रतियोगिता की दशाऐं – (conditions of perfect competition

फर्म का साम्य Equilibrium of the Firm

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म का साम्य

- Equilibirium of firm under perfect competition

1.अल्पकाल में फर्म को अधिसामान्य लाभ

- (Super Normal Profit to Firm in short period)

2.अल्पकाल में फर्म को सामान्य लाभ

- (Normal Profit to Firm in short Period)

3. अल्पकाल में फर्म को न्यूनतम हानि

- (Minimum loss to Firm in short Period)

दीर्घकाल में फर्म का संतुलन –

(Long run Equilibrium of the firm)

निष्कर्ष Conclusion

प्रश्न Question

पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का साम्य

Equilibrium of firm under perfect competition

भूमिका – (introduction)

मांग सिद्धांत के विश्लेषण में जो महत्व एक उपभोक्ता का होता है ठीक वही महत्व वस्तु के मूल्य एवं उत्पादन की मात्रा के निर्धारण में एक फर्म का होता है। आधुनिक समय में वस्तु के उत्पादन की मात्रा एवं उसके मूल्य का निर्धारण फर्म एवं उद्योग के साम्य के आधार पर किया जाता है। इस अध्याय में हम पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म के साम्य का अध्ययन करेंगे।

- पूर्ण प्रतियोगिता – वह बाजार है जिसमें क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच वस्तु का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है । समरूप वस्तुओं को एक समान कीमत पर अनेक क्रेता व विक्रेता द्वारा खरीदा व बेचा जाता है।

परिभाषा (Definition)

श्रीमती जॉन राबिन्सन के अनुसार – पूर्ण प्रतियोगिता तब पायी जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए मांग पूर्णतया लोचदार होती है। इसका अर्थ है, प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है,,जिससे कि किसी एक विक्रेता का उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है। तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं, जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता की दशाऐं –
(conditions of perfect competition)

- वस्तु का समरूप होना (Homogeneous product)
- क्रेताओं तथा विक्रेताओं की बाजार में अधिक संख्या होना (large Number of buyers and sellers in the market)
- फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन (Free entry and exit of firms)
- क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार का पूर्ण ज्ञान (Perfect knowledge of market to buyers and sellers)
- उत्पत्ति के साधनों में पूर्ण गतिशीलता (Perfect mobility in the factors of production)
- परिवहन लागत की अनुपस्थिति (Absence of transport cost)
- उत्पादकों या फर्मों का बहुत समीप होना (All the producers or firms are sufficiently close to each other)

फर्म एवं उद्योग का अर्थ

- **फर्म** – एक वस्तु का उत्पादन करने वाली एक इकाई होती है। फर्म एक शहर तक ही सीमित होती है । जबकि
- **उद्योग** एक व्यापक क्षेत्र में फैला होता है। तथा एक ही प्रकार के सजातीय वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फर्मों का समूह होता है।

फर्म का साम्य Equilibrium of the Firm

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने किसी वस्तु के मूल्य निर्धारण एवं उत्पादन की मात्रा के निर्धारण का अध्ययन फर्म के साम्य के आधार पर किया है, अर्थशास्त्र में एक फर्म उस समय साम्य की स्थिति में होती है जबकि उसमें उत्पादन को बढ़ाने अथवा घटाने की कोई प्रेरणा नहीं होती है। ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है जब फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। अतः फर्म उस समय संतुलन की अवस्था में होती है जबकि वह अधिकतम मौद्रिक लाभ अर्जित करती है। एक फर्म वस्तु के उत्पादन से अधिकतम लाभ कमाने के लिए वस्तु के उत्पादन को इस सीमा तक बढ़ाती है जहां पर एक अतिरिक्त इकाई को उत्पन्न करने से होने वाली सीमांत लागत Marginal cost और इस अतिरिक्त इकाई को बेचने से प्राप्त होने वाली सीमांत आय Marginal Revenue एक दूसरे के बराबर नहीं हो जाते हैं। उत्पादन की वह मात्रा जिस पर फर्म की सीमांत लागत MC और फर्म की सीमांत आय MR एक दूसरे के बराबर होती हैं अर्थात फर्म को न तो लाभ होता है न तो हानि, साम्य उत्पादन की मात्रा कहते हैं। इसी उत्पादन पर फर्म को लाभ प्राप्त होता है।

फर्म के साम्य के लिए दो शर्तों का होना आवश्यक है–

1.फर्म की सीमांत आय **MR** उसकी सीमांत लागत **MC** के बराबर होना चाहिए।

2.फर्म की सीमांत लागत रेखा **MC** फर्म की सीमांत आय **MR** रेखा को नीचे से काटे तथा कटान बिंदु के बाद वह सीमांत आय वक्र से उपर रहे।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म का साम्य

Equilibirium of firm under perfect competition

- पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म मूल्य को स्वीकार करने वाली होती है एवं उत्पादन की मात्रा को समायोजित करने वाली होती है। अतः वह उद्योग द्वारा निर्धारित मूल्य को स्वीकार कर साम्य उत्पादन की मात्रा निश्चित करती है। उद्योग में कीमत का निर्धारण वस्तु की बाजार मांग एवं पूर्ति के आधार पर किया जाता है।
- पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु का मूल्य हमेशा एक समान ही होता है। इस स्थिर मूल्य पर फर्म जितना चाहे वस्तुओं की बिक्री कर सकती है। इसलिए फर्म की औसत आय की रेखा AR आधार रेखा OX के समानान्तर होती है। AR रेखा को फर्म की मांग रेखा या कीमत रेखा या बिक्री रेखा भी कहते है।
- पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म वस्तु के मूल्य में बगैर परिवर्तन किये बिना जितनी मात्रा में चाहे वस्तुओं की बिक्री कर सकती है। इसलिए फर्म की AR व MR की रेखा दोनों एक ही रेखा होती है और ये आधार रेखा के समानान्तर होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता में एक वस्तु की कीमत का निर्धारण उद्योग की कुल मांग एवं कुल पूर्ति के संतुलन पर होता है।

उद्योग			फर्म				
कीमत price P	मॉग Demand	पूर्ति Supply	कीमत P	मात्रा Q	कुल आय TR P×Q	औसत आय AR TR/Q	सीमांत आय MR TRn+1 -TRn
10	50	10	25	20	500	25	25
20	40	20	25	21	525	25	25
25	**30**	**30**	25	22	550	25	25
30	20	50	25	23	575	25	25
35	10	60	25	24	600	25	25

अर्थात P=AR=MR

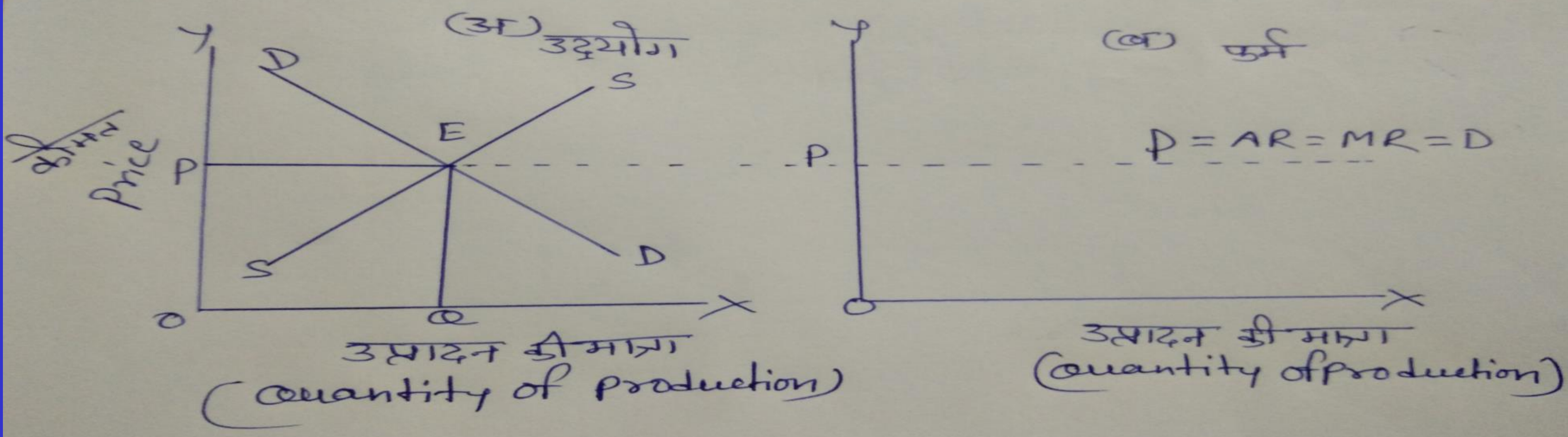
(अ) उद्योग
Y
D
S
E
कीमत
Price
P
S
D
O
Q
X
उत्पादन की मात्रा
(Quantity of production)
(ब) फर्म
Y
P
P = AR = MR = D
O
X
उत्पादन की मात्रा
(Quantity of production)

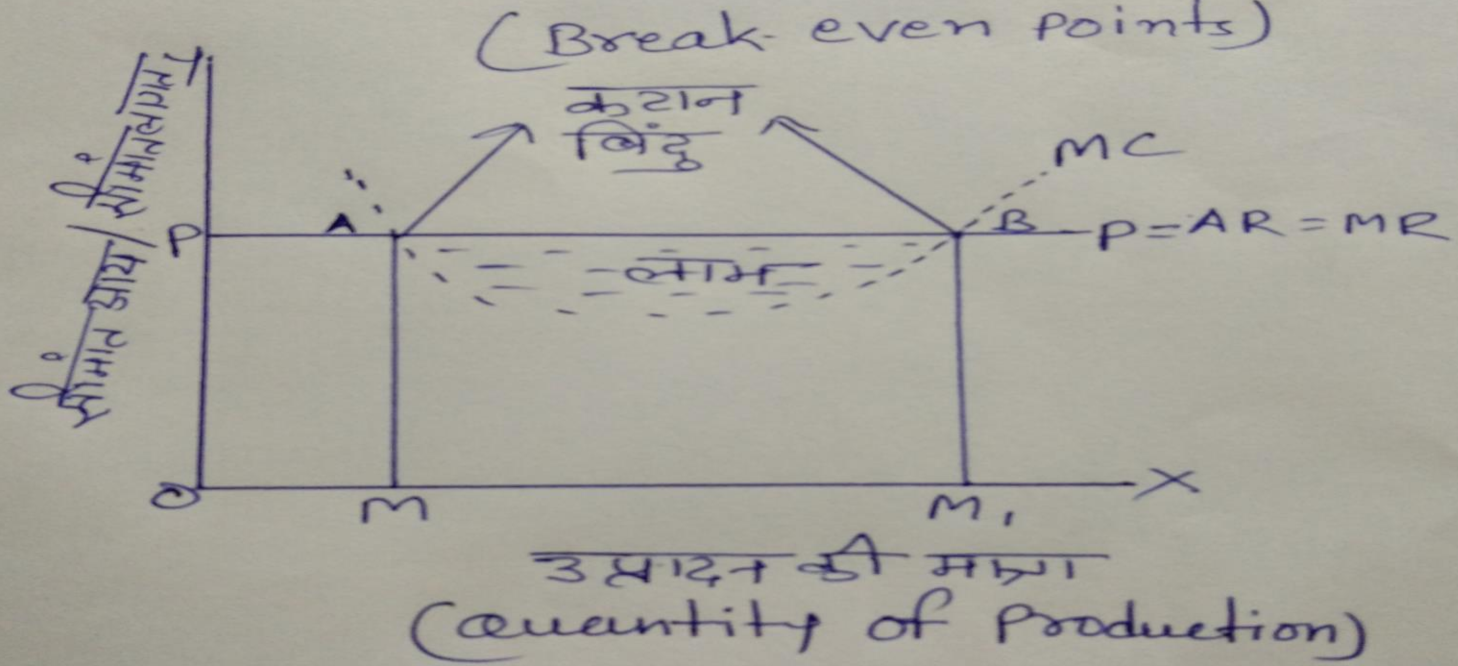
(Break even points)
कटान
बिंदु
MC
Y
सीमांत आय / सीमांत लागत
P
A
B
P=AR=MR
लाभ
O
M
M1
X
उत्पादन की मात्रा
(Quantity of Production)

विशुद्ध प्रतियोगिता – Pure competition

कुछ समय पहले तक पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में भेद किया जाता था किन्तु प्रो0 चैम्बरलिन ने पूर्ण प्रतियोगिता तथा विशुद्ध प्रतियोगिता में भी अंतर किया है। विशुद्ध प्रतियोगिता को परमाणुवादी प्रतियोगिता (Atomistic Competition) भी कहते हैं। जब एकाधिकारी तत्वों (Monopoly elements) का अभाव हो तब विशुद्ध प्रतियोगिता पायी जाती है। पूर्ण प्रतियोगिता एक व्यापक शब्द है जबकि विशुद्ध प्रतियोगिता इसका एक भाग है।

इसके लिए चार बातों का होना आवश्यक है–

1. वस्तु का समरूप होना (Homogeneous product)
2. क्रेताओं तथा विक्रेताओं की बाजार में अधिक संख्या होना (large Number of buyers and sellers in the market)
3. फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन (Free entry and exit of firms)
4. विक्रय लागत की अनुपस्थिति

मूल्य निर्धारण के लिए पूर्ण प्रतियोगिता शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत अल्पकाल में फर्म का संतुलन

(Equilibrium of firm in short period under perfect competition)

- अल्पकाल जैसा कि नाम से स्पष्ट है, कम समय अत: थोड़े समय में फर्म अपने संयंत्र के आकार में परिवर्तन नहीं करती है केवल परिवर्तनशील साधनों की मात्रा में परिवर्तन करके अपने उत्पादन की मात्रा में कमी या वृद्धि कर सकती है। अल्पकाल में यदि फर्मों को औसत परिवर्तनशील लागत के बराबर (Average variable cost, AVC) उत्पादन की प्राप्ति होती है तो वे उद्योग को नहीं छोड़ती हैं। इसका कारण यह है कि अल्पकाल में उत्पादन न किये जाने पर फर्म को स्थिर लागत (Fixed cost) का भार वहन करना ही पड़ता है। इसलिए फर्म यदि औसत परिवर्तनशील लागत के बराबर या उससे अधिक किन्तु औसत लागत से कम मूल्य मिलने पर भी उत्पादन कार्य को जारी रखती है तथा यदि उसे AVC से कम मूल्य की प्राप्ति होती है तो वह उत्पादन कार्य को बंद कर देती है। इसलिए अल्पकाल में AVC को उत्पादन बंद करने का बिंदु या shut down point कहते हैं।

अल्पकाल में फर्म को तीन स्थितियां प्राप्त होंगी अधिसामान्य लाभ, सामान्य लाभ एवं हानि।

- अल्पकाल में फर्म को अधिसामान्य लाभ

(Super Normal Profit to Firm in short period)

1.पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म को अधिसामान्य लाभ तब मिलती है जब उसकी औसत आय (Average Revenue) औसत लागत (Average cost) से अधिक होती है।

रेखाचित्र –

2.अल्पकाल में फर्म को सामान्य लाभ

(Normal Profit to Firm in short Period)

पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म को सामान्य लाभ तब मिलती है जब उसकी औसत आय (Average Revenue) एवं औसत लागत (Average cost) एक दूसरे के बराबर होती है।

रेखाचित्र –

3. अल्पकाल में फर्म को न्यूनतम हानि

(Minimum loss to Firm in short Period)

पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म को न्यूनतम हानि तब मिलती है जब उसकी औसत आय (Average Revenue), से औसत लागत (Average cost) अधिक होती है।

रेखाचित्र –

- दीर्घकाल में फर्म का संतुलन –

(Long run Equilibrium of the firm)

दीर्घकाल चूंकि लम्बी समयावधि होती है। पर्याप्त समय होने के कारण फर्में अपने संयंत्र के आकार में परिवर्तन कर लेती हैं अर्थात मांग के अनुरूप पूर्ति का समायोजन। तथा पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों का प्रवेश एवं बहिर्गमन स्वतंत्र होने के कारण बाकी फर्मों को लाभ होता देखकर अन्य फर्में भी बाजार में प्रवेश करने लगती हैं जिससे वस्तु की पूर्ति मांग की तुलना में बढ़ जाता है और फर्मों को केवल और केवल दीर्घकाल में सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

- चित्र –

- निष्कर्ष – पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत अल्पकाल में फर्म को अधिसामान्य लाभ ,सामान्य लाभ तथा हानि तीनों ही स्थितियां प्राप्त हो सकती है किन्तु दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त होता है। लेकिन जिस संसार में हम रहते हैं वहां पूर्णप्रतियोगिता जैसी स्थिति देखने को नहीं मिलती है। जैसे–

1.क्रेता व विक्रेता की संख्या अधिक 2. एक कीमत 3. बाजार का पूर्ण ज्ञान नहीं 3.समरूप वस्तुऐं नहीं 4. साधनों में गतिशीलता का अभाव 5. स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन नहीं 6. क्रेता व विक्रेता कीमत को प्रभावित नहीं करता

अतः हम कह सकते हैं कि यह एक काल्पनिक धारणा है।

प्रश्न

- फर्म के साम्य से आप क्या समझते हैं, पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म के साम्य को समझाइए।

What do you understand by the firm's Equilibrium ?. Explain the firm's equilibrium under perfect competition

THANKYOU